

संस्कृति और पर्यटन

- ❑ संस्कृति मंत्रालय को देश की प्राचीन सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और परिरक्षण तथा मूर्त और अमूर्त दोनों ही तरह की कलाओं एवं संस्कृति के संवर्धन जैसे कार्यों का दायित्व मिला है।
- ❑ मंत्रालय के दो संबद्ध कार्यालय, दो अधीनस्थ कार्यालय और 35 स्वायत्त संगठन हैं जो पूरी तरह सरकार द्वारा वित्तपोषित हैं।
- ❑ देश के विभिन्न अंचलों की लोक और पारंपरिक कलाओं से संबंधित कार्यों के लिए सात क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र कार्य कर रहे हैं। इसके अलावा मंत्रालय के 4 मिशन भी हैं जिनके नाम हैं:-
 - राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन।
 - राष्ट्रीय स्मारक तथा पुरावशेष मिशन।
 - राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन
 - गांधी धरोहर स्थल मिशन।
- ❑ मूर्त धरोहर के अंतर्गत मंत्रालय केंद्र द्वारा संरक्षित राष्ट्रीय महत्त्व के सभी स्मारकों की देखरेख भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण के माध्यम से करता है।
- ❑ मूर्त कलाओं के क्षेत्र में मंत्रालय दृश्य कलाओं, निष्पादन कलाओं और साहित्यिक कलाओं में संलग्न व्यक्तियों, समूहों और सांस्कृतिक संगठनों को वित्तीय सहायता प्रदान करता है।
- ❑ संस्कृति मंत्रालय बौद्ध और तिब्बती संस्कृति के संरक्षण और प्रोत्साहन के कार्य में लगा है और इसके लिए सारनाथ, वाराणसी और लेह आदि स्थानों में स्थित विभिन्न संस्थाओं की मदद ली जाती है।
- ❑ भारतीय और एशियाई कला और संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्टता प्राप्त करने के इच्छुक लोगों के लिए मंत्रालय का सुनियोजित क्षमता निर्माण कार्यक्रम है।

ललित कला अकादमी

- ललित कला अकादमी की स्थापना 1954 में की गई। यह भारत में दृश्य कलाओं के क्षेत्र में शीर्ष सांस्कृतिक संस्थान है।
- अकादमी के मिशन का मुख्य विषय है आधुनिक और समसामयिक भारतीय कला की समझ को बढ़ाना जिससे स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर लोग इसका आनंद उठा सकें।
- इसके लिए अकादमी राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी और अंतर्राष्ट्रीय त्रिनाले-इंडिया (त्रैवार्षिकी भारत) जैसे आयोजन करती है।
- अकादमी अपने कार्यक्रमों और नीतिगत साझेदारियों के माध्यम से भारतीय कला और कलाकारों को बढ़ावा देने के लिए कई गतिविधियां संचालित करती है।
- कला के विकास के प्रति अकादमी की वचनबद्धता नई दिल्ली

स्थित इसके मुख्यालय और भुवनेश्वर, चेन्नई, कोलकाता, गढ़ी (नई दिल्ली) स्थित केंद्रों तथा शिमला और पटना स्थित उप-केंद्रों में आयोजित किए जाने वाले राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर के शानदार कार्यक्रमों से प्रदर्शित होती है।

संगीत नाटक अकादमी

- संगीत नाटक अकादमी संगीत, नृत्य और नाटक की राष्ट्रीय अकादमी है जिसकी आधुनिक भारत के निर्माण में अग्रणी भूमिका रही है।
- 1945 में एशियाटिक ऑफ बंगाल ने एक प्रस्ताव दिया था जिसमें एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक न्यास बनाकर उसके तहत तीन अकादमियाँ—नृत्य, नाटक और संगीत की अकादमी, साहित्य अकादमी और कला एवं स्थापत्य की अकादमी के गठन की

बात कही गई थी।

- ❖ 1961 में सरकार ने संगीत-नाटक अकादमी का एक सोसाइटी के रूप में पुनर्गठन किया और सोसाइटी पंजीकरण अधिनियम, 1860 (1957 में यथा संशोधित) के अंतर्गत इसका पंजीकरण कराया।
- ❖ अकादमी ने भारत में संगीत, नृत्य और नाट्य साधना करने वालों की मदद के लिए एकीकृत ढांचे का निर्माण कार्य किया जिसके अंतर्गत शहरी और ग्रामीण समेत देश के सभी भागों की पारंपरिक और आधुनिक कलाएं शामिल हों।
- ❖ अकादमी के पास श्रव्य और दृश्य टेप, 16 मिमी फिल्मों, फोटोग्राफ और ट्रांसपेरेंसीज का विशाल अभिलेखागार है और यह निष्पादन कलाओं के क्षेत्र में अनुसंधान करने वालों के लिए देश में सूचनाओं और सामग्री का सबसे बड़ा स्रोत है।
- ❖ मंत्रालय का अपना संदर्भ पुस्तकालय है जिसमें अंग्रेजी, हिंदी और कुछ क्षेत्रीय भाषाओं की पुस्तकें हैं।
- ❖ अकादमी की प्रकाशन इकाई प्रासंगिक विषयों में छोटे पैमाने पर साहित्य का प्रकाशन करती है।
- ❖ अकादमी निष्पादन कलाओं के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व की संस्थाएं और परियोजनाएं स्थापित करती है और उनकी देखरेख करती है।
- ❖ इफाल स्थित जवाहर लाल नेहरू मणिपुरी नृत्य अकादमी की स्थापना 1954 में हुई थी। यह मणिपुरी नृत्य और संगीत का प्रशिक्षण देने वाली प्रमुख संस्था है।
- ❖ 1959 में अकादमी ने दिल्ली में राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और एशियाई रंगमंच संस्थान की स्थापना की। 1964 में दिल्ली में ही कथक केंद्र स्थापित किया गया।
- ❖ अकादमी की राष्ट्रीय महत्व की अन्य परियोजनाओं में केरल का कुटियट्टम रंगमंच भी शामिल है जिसकी स्थापना 1991 में की गई।
- ❖ 2001 में यूनेस्को ने कुटियट्टम को मानवता की अमूर्त और मौखिक धरोहर की उत्कृष्टतम कृतियों में से एक बताया था।
- ❖ ओडिशा, पश्चिम बंगाल और झारखंड के छऊ नृत्य की परियोजना 1994 में प्रारंभ हुई।

राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय

- ❖ संगीत नाटक अकादमी द्वारा 1959 में स्थापित राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय दुनिया का अग्रणी रंगमंच संस्थान है और भारत में अपनी तरह का पहला है।
- ❖ 1975 में इसे एक स्वायत्त संस्थान बना दिया गया जिसका वित्त पोषण पूरी तरह संस्कृति विभाग द्वारा किया जाता है।
- ❖ राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय का उद्देश्य विद्यार्थियों को रंगमंच के इतिहास, नाटकों के निर्माण, दृश्य आकल्पन, परिधान आकल्पन,

प्रकाश, रूप सज्जा जैसे रंगमंच के विभिन्न पक्षों के बारे में विद्यार्थियों को जानकारी देना है।

- ❖ विद्यालय का पाठ्यक्रम तीन साल का है और इसके लिए दो चरण वाली चयन प्रक्रिया के जरिये विद्यार्थियों का चुनाव किया जाता है।

साहित्य अकादमी

- ❖ साहित्य अकादमी भारत की 24 मान्यता प्राप्त भाषाओं के साहित्य को बढ़ावा देने वाली राष्ट्रीय अकादमी है।
- ❖ यह इन मान्यता प्राप्त भाषाओं में कार्यक्रमों का आयोजन करती है, इन भाषाओं के लेखकों को पुरस्कार और फेलोशिप प्रदान करती है और इनमें पूरे साल पुस्तकों का प्रकाशन करती है।
- ❖ पिछले छह दशकों से भी अधिक अवधि में अकादमी ने 24 भाषाओं में 7,000 से अधिक पुस्तकों का प्रकाशन किया है।
- ❖ अकादमी कथा साहित्य, कविता, ड्रामा और आलोचना की मौलिक पुस्तकों के साथ-साथ उनके अनुवाद भी प्रकाशित करती है और क्लासिकल, मध्यकालीन, प्राक्-आधुनिक और समसामयिक साहित्य इसके दायरे में आता है।
- ❖ साहित्य अकादमी के पुरस्कार भारत में अत्यंत प्रतिष्ठित साहित्यिक पुरस्कार माने जाते हैं जो अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भारतीय भाषाओं में प्रकाशित साहित्यिक उत्कृष्टता वाली सबसे श्रेष्ठ पुस्तकों को प्रदान किए जाते हैं।
- ❖ अकादमी द्वारा मान्यता प्राप्त 24 भाषाओं में उत्कृष्ट अनुवाद के लिए दिए जाने वाले अनुवाद पुरस्कार के तहत 50 हजार रुपये की राशि और प्रशस्ति-पत्र दिया जाता है। अकादमी के दो अन्य पुरस्कार हैं— बाल साहित्य पुरस्कार और युवा पुरस्कार हैं।

इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र

- ❖ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र (आईजीएनसीए) राष्ट्रीय स्तर का अकादमिक अनुसंधान केंद्र है जिसके दायरे में क्लासिकल से लेकर लोक, लिखित से लेकर मौखिक और प्राचीन से लेकर आधुनिक तक सभी प्रकार की कलाओं का अध्ययन और अनुभव शामिल है।
- ❖ नई दिल्ली के बीचों-बीच स्थित यह कला केंद्र संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत एक स्वायत्त न्यास है।
- ❖ यहां भारत, दक्षिण एशिया, दक्षिण-पूर्व एशिया और पश्चिम एशिया के स्थापत्य, नृत्यशास्त्र, इतिहास, दर्शनशास्त्र, भाषा और साहित्य, कला व शिल्प समेत विभिन्न विषयों के संसाधनों का समृद्ध संकलन उपलब्ध है।
- ❖ इसके बहुभाषिक पुस्तकालय 'कलानिधि' में करीब 2,00,000 पुस्तकें, 175 पत्रिकाएं और दुर्लभ पुस्तकों का विस्तृत संकलन

उपलब्ध हैं। इसका संदर्भ पुस्तकालय सबके लिए खुला रहता है।

- ❶ इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के पास भारतीय कलाओं की करीब 1,00,000 स्लाइड्स हैं जो चित्रकला, मूर्तिशिल्प, वास्तुशास्त्र सचित्र पांडुलिपियां और निष्पादन कलाओं से संबंधित हैं।

सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र

- ❶ सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र (सीसीआरटी) शिक्षा को संस्कृति से जोड़ने की दिशा में काम करने वाले अग्रणी संगठनों में से एक है।
- ❷ इसकी स्थापना 1979 में स्वायत्त संगठन के रूप में भारत सरकार द्वारा की गई। नई दिल्ली स्थित इसके मुख्यालय के अलावा उदयपुर, हैदराबाद और गुवाहाटी में इसके क्षेत्रीय केंद्र हैं।
- ❸ सांस्कृतिक संसाधन और प्रशिक्षण केंद्र के मुख्य उद्देश्य हैं: विद्यार्थियों में भारत की क्षेत्रीय संस्कृतियों की विविधता के बारे में जागरूकता और समझ पैदा करता और इस जानकारी को शिक्षा के साथ जोड़ना।
- ❹ इसका मुख्य जोर इस बात पर रहता है कि किस तरह शिक्षा को संस्कृति से जोड़ा जाए और किस तरह से विद्यार्थियों को विकास कार्यक्रमों में संस्कृति के महत्व के बारे में जागरूक बनाया जाए।
- ❺ सीसीआरटी नाटक, संगीत और वाचिक कला विधाओं आदि के बारे में कार्यशालाएं आयोजित करता है। अध्यापकों को ऐसे कार्यक्रम तैयार करने पर जोर दिया जाता है जिनसे शैक्षिक पाठ्यक्रम को पढ़ाने में कला विधाओं का लाभ उठाया जा सके।

क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्र

- ❶ क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों का उद्देश्य स्थानीय संस्कृति के बारे में जागरूकता बढ़ाना और यह प्रदर्शित करना है कि किस तरह ये मिलकर एक क्षेत्रीय सांस्कृतिक पहचान बनती हैं और अंततः भारत की सामासिक संस्कृति की समृद्ध विविधता के रूप में परिलक्षित होते हैं।
- ❷ ये केंद्र साहित्य और चाश्रुष कलाओं के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान करके निष्पादन कलाओं को बढ़ावा देते हैं। पटियाला, कोलकाता, तंजावुर, उदयपुर, इलाहाबाद, दीमापुर और नागपुर में सात क्षेत्रीय केंद्रों की स्थापना 1985-86 में की गई थी।
- ❸ किसी राज्य की अपने सांस्कृतिक संपर्कों के आधार पर एक भी अधिक क्षेत्रीय सांस्कृतिक केंद्रों में भागीदारी इन क्षेत्रीय केंद्रों के गठन की विशेषता है।

एक भारत, श्रेष्ठ भारत

- ❶ बौद्ध तिब्बती संस्थाओं का उद्देश्य देश की अमूर्त बौद्ध/तिब्बती/

हिमालयी सांस्कृतिक विरासत के प्रचार, प्रसार और संरक्षण में मदद करना है।

इस पहल के व्यापक लक्ष्य हैं

- ❶ राष्ट्र की विविधता में एकता का महिमामंडन और देश के लोगों के बीच परंपरा से विद्यमान भावनात्मक संबंधों को ताने-बाने को बनाए रखना और सुदृढ़ करना।
- ❷ सभी राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के बीच सालभर तक चलने वाले सुनियोजित गहन और स्तरीकृत संपर्क के जरिये राष्ट्रीय एकता की भावना को बढ़ावा देना।
- ❸ किसी भी राज्य की समृद्ध धरोहर और संस्कृति तथा रीति-रिवाज और परंपराओं को प्रदर्शित करना ताकि लोग भारत की विविधता को समझ और परख सकें और उनके बीच एक जैसी पहचान को बढ़ावा मिले।
- ❹ दीर्घावधि संपर्कों की स्थापना
- ❺ ऐसे वातावरण का निर्माण करना जिसमें एक दूसरे के बेहतरीन तौर तरीकों और अनुभवों से सीखने की प्रवृत्ति को बढ़ावा मिले।

हिमालय की सांस्कृतिक विरासत

- ❶ इस योजना का उद्देश्य हिमालय की सांस्कृतिक धरोहर का संवर्धन और संरक्षण करना है।
- ❷ इसे 2011 में संशोधित किया गया था जिसके अनुसार निम्नलिखित गतिविधियां करने वालों को अनुदान सहायता दी जाती हैं:
 1. सांस्कृतिक विरासत के अध्ययन और अनुसंधान;
 2. पुरानी पांडुलिपियों, साहित्य, कला व शिल्प का परिरक्षण और संगीत, नृत्य जैसे सांस्कृतिक कार्यक्रमों/गतिविधियों का प्रलेखन;
 3. कला और संस्कृति के कार्यक्रमों के माध्यम से प्रचार-प्रसार; और
 4. हिमालय क्षेत्र के अंतर्गत आने वाले राज्यों, जम्मू-कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखंड, सिक्किम और अरुणाचल प्रदेश में परंपरागत और लोक कलाओं में प्रशिक्षण।

बौद्ध/तिब्बती संगठनों का विकास

- केंद्रीय बौद्ध अध्ययन संस्थान
- नव नालंदा महाविहार
- केंद्रीय तिब्बती अध्ययन विश्वविद्यालय
- केंद्रीय हिमालयी सांस्कृतिक अध्ययन संस्थान

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना 1961 में की गई थी। यह संस्कृति मंत्रालय के संबद्ध कार्यालय के रूप में कार्य करता है।

इसकी प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं

- पुरातत्व अवशेषों का सर्वेक्षण और उत्खनन;
 - केंद्र द्वारा संरक्षित स्मारकों, स्थलों और अवशेषों का रखरखाव और संरक्षण।
 - स्मारकों और पुरातात्विक अवशेषों का रासायनिक अनुरक्षण;
 - स्मारकों का वास्तुशास्त्रीय सर्वेक्षण;
 - परालिपि अनुसंधान तथा मुद्रा अध्ययन जैसी विद्याओं का विकास;
 - किसी स्मारक या पुरातात्विक स्थल पर संग्रहालय की स्थापना तथा पुनर्गठन;
 - विदेशों में अभियान;
 - पुरातत्व शास्त्र में प्रशिक्षण;
 - तकनीकी रिपोर्टों व अनुसंधान ग्रंथों का प्रकाशन।
- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के पांच क्षेत्रीय निदेशालय, 29 सर्किल और तीन मिनी सर्किल हैं जिनके माध्यम से यह अपने अधीन स्मारकों का संरक्षण और अनुरक्षण करता है।
 - प्राचीन स्मारक और पुरातात्विक स्थल एवं अवशेष अधिनियम, 1958 के अंतर्गत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने देशभर में 3,686 स्मारकों/स्थलों को राष्ट्रीय महत्व का घोषित किया है।
 - इनमें से 21 यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल हैं। पांच स्थल-गुजरात में चंपानेर-पावागढ़ पुरातात्विक पार्क, मुंबई का छत्रपति शिवाजी टर्मिनस रेलवे स्टेशन (जिसे पहले विक्टोरिया टर्मिनस कहा जाता था) वृहदीश्वर मंदिर परिसर, गंगइकोंडा चोलपुरम और ऐरावतेश्वर मंदिर संकुल और वृहदीश्वर मंदिर संकुल के विस्तार के रूप में दारासुरम।
 - तंजावुर को 2004 में यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल कर लिया गया है। यह शहर अब आमतौर पर जागृत चोल मंदिरों के रूप में जाना जाता है।
 - मुंबई की विक्टोरिया युग की कलाकृतियों (विक्टोरियन एंड आर्ट डिको इनसेम्बल) के संग्रहालय को यूनेस्को की विश्व धरोहर सूची में शामिल करने के लिए नामांकन संबंधी कागजात विश्व विरासत केंद्र को भेज दिए गए हैं।
 - भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण इस समय 5,000 से अधिक संरचनाओं का रखरखाव कर रहा है।
 - भारतीय पुरातत्व, सर्वेक्षण की विज्ञान शाखा का मुख्यालय देहरादून

में है और देश के विभिन्न भागों में इसकी क्षेत्रीय प्रयोगशालाएं हैं जो स्मारकों, पुरावस्तुओं, पांडुलिपियों, चित्रकला आदि का रासायनिक संरक्षण करती हैं।

- भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की उद्यान शाखा देश के विभिन्न भागों में केंद्र द्वारा संरक्षित करीब 287 स्मारकों/स्थलों में उद्यानों का रखरखाव करती हैं।
- दिल्ली, आगरा, श्रीगंगरपट्टनम और भुवनेश्वर की प्रमुख पौधशालाओं से विभिन्न उद्यानों के लिए पौधे भेजे जाते हैं।
- मैसूर स्थित पुरालेख शाखा संस्कृत और द्रविड़ भाषाओं में अनुसंधान करती है जबकि नागपुर शाखा अरबी और फारसी भाषाओं में यही कार्य करती हैं।
- विदेशों में स्मारकों के संरक्षण के कार्य के बारे में विदेश मंत्रालय के अनुरोध पर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने कंबोडिया में तो प्रोहा मंदिर, लाओ गणराज्य में वात फोड मंदिर, म्यांमार में आनंद मंदिर और वियतनाम में माइ सन स्मारकों के संरक्षण का कार्य प्रारंभ किया है।

देहरादून में विज्ञान शाखा की प्रयोगशाला ने निम्नलिखित वैज्ञानिक परियोजनाओं का कार्य हाथ में लिया है

- परिरक्षक परत के रूप में नयी सामग्री का मूल्यांकन और उससे पत्थर, टैराकोटा, ईंट आदि के ढांचों को मजबूत बनाना;
- चूने की पुरानी पलस्तर की गई परत के बारे में वैज्ञानिक अध्ययन;
- पलस्तर वाले सीमेंट में जल्द जमने वाले सीमेंट को अलग-अलग अनुपात में मिलाकर उसके भौतिक गुणों का आकलन।

राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन

- राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन की शुरुआत 2007 में हुई।
- इसका उद्देश्य 11वीं योजना के दौरान निर्मित धरोहर और स्थलों तथा पुरावशेषों के बारे में विभिन्न स्रोतों एवं संग्रहालयों से राष्ट्रीय डेटाबेस तैयार करना है ताकि योजनाकार और अनुसंधानकर्ता आदि इसका उपयोग सांस्कृतिक संसाधनों के बेहतर प्रबंधन में कर सकें।
- इसमें शामिल कार्य के परिमाण को ध्यान में रखते हुए और राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद की तृतीय पक्ष मूल्यांकन रिपोर्ट की सिफारिशों के अनुसार मिशन को भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण का एक प्रभाग बना दिया गया है।

राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन की सौंपी गई जिम्मेदारी के अनुसार दो रजिस्टर यानी पंजियाँ तैयार की जानी हैं

- ❑ निर्मित धरोहरों और स्थलों का राष्ट्रीय रजिस्टर; और
- ❑ पुरावशेषों का रजिस्टर। विभिन्न द्वैतीय स्रोतों से 2 लाख निर्मित धरोहरों और स्थलों के डेटा का प्रलेखन किया गया है।
- ❑ राष्ट्रीय स्मारक और पुरावशेष मिशन के पास अब तक विभिन्न स्रोतों से करीब 15 लाख पुरावस्तुओं के डेटा का प्रलेखन किया है।

राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन

- ❖ राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन की स्थापना 2003 में की गई थी और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र को इसकी देखरेख करने वाली नोडल एजेंसी बनाया गया था।
- ❖ इसका उद्देश्य पांडुलिपियों में विद्यमान देश की ज्ञान की विरासत को सहेज कर रखना था।
- ❖ भारत की मूर्त विरासत के स्थान निर्धारण, प्रलेखन, परिरक्षण और प्रलेखन के लिए देशभर में पांडुलिपि संसाधन केंद्र, पांडुलिपि संरक्षण केंद्र और पांडुलिपि संरक्षण साझेदार केंद्र बनाए गए हैं।

मिशन की प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं

- ❑ सर्वेक्षण के माध्यम से पांडुलिपियों का प्रलेखन करना,
- ❑ निवारक और उपचारात्मक विधियों से पांडुलिपियों का संरक्षण,
- ❑ संरक्षण के तौर-तरीकों के बारे में प्रशिक्षण पाठ्यक्रमों और कार्यशालाओं का संचालन करना,
- ❑ प्राचीन लिपियों के बारे में शिक्षण के लिए हस्तलिपि विज्ञान और पुरालेखशास्त्र की कार्यशालाएं आयोजित करना,
- ❑ पांडुलिपियों का डिजिटिकरण ताकि उन्हें अभिलेखागार में इस तरह से रखा जा सके जिससे ज्ञान के इस स्रोत तक आसानी से पहुंचा जा सके,
- ❑ प्रकाशनों के जरिये पांडुलिपियों में निहित ज्ञान का प्रसार
- ❑ पांडुलिपियों के महत्व के बारे में जनता में जागरूकता पैदा करने के लिए विस्तारण कार्यक्रम।

राष्ट्रीय संग्रहालय

- ❖ राष्ट्रीय संग्रहालय की स्थापना संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत 1960 में की गई थी और यह मंत्रालय के अधीनस्थ कार्यालय की तरह कार्य करता है।

- ❖ यह 2.6 लाख से अधिक कला वस्तुओं का खजाना है जिनमें प्रागैतिहासिक काल की सामग्री से लेकर आधुनिक कला वस्तुएं भी शामिल हैं।
- ❖ संग्रहालय की मुख्य गतिविधियां इस प्रकार हैं: कला वस्तुओं का प्रदर्शन, दीर्घाओं का आधुनिकीकरण/पुनर्संयोजन, शैक्षिक गतिविधियां और विस्तार कार्यक्रम, जनसंपर्क, प्रकाशन, फोटो प्रलेखन, ग्रीष्मकालीन अवकाश कार्यक्रम, स्मारक व्याख्यान, फोटो यूनिट, मॉडलिंग यूनिट, पुस्तकालय, संरक्षण प्रयोगशाला और कार्यशालाएं।

राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय

- ❖ राष्ट्रीय आधुनिक कला संग्रहालय (एनजीएमए) की स्थापना 1954 में समसामयिक भारतीय कला के विकास और संवर्धन के लिए की गई थी।
- ❖ इसमें करीब 1,748 समकालीन भारतीय कलाकारों की प्रतिनिधि कृतियां रखी हुई हैं।
- ❖ संग्रहालय के अनमोल खजाने में चित्रकलाकृतियां, मूर्तिशिल्प, ग्रैफिक कला कृतियां और फोटोग्राफ शामिल हैं।

भारतीय संग्रहालय

- ❖ कोलकाता का भारतीय संग्रहालय (इंडियन म्यूजियम) दुनिया के आठ सबसे पुराने संग्रहालयों में से एक है। करीब 1.10 लाख कलाकृतियों का यह खजाना प्राच्य इतिहास और भारत की धरोहर की कहानी कहता है।
- ❖ भारतीय संग्रहालय की उत्पत्ति और विकास का इतिहास भारत की विरासत और संस्कृति के विकास के शानदार घटनाक्रम की गाथा कहता है।
- ❖ भारत विद्या के महान विद्वान विलियम जोन्स ने 1784 में एशियाटिक सोसाइटी की स्थापना की और अपना सारा जीवन भारत के विकास में लगा दिया।
- ❖ डेनमार्क के वनस्पतिशास्त्रीय डॉ. नैथेनियल वालिच ने एशियाटिक सोसाइटी को एक पत्र लिखकर सोसाइटी परिसर में एक संग्रहालय स्थापित करने की जोरदार वकालत की।

राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद

- ❖ राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद संस्कृति मंत्रालय के तहत एक स्वायत्त संगठन है। यह दुनिया में अपनी तरह का अकेला संगठन है जिसके प्रशासनिक नियंत्रण में विज्ञान केंद्रों/संग्रहालयों का सबसे बड़ा नेटवर्क कार्य कर रहा है।
- ❖ यह 'जनता के सशक्तीकरण के लिए विज्ञानसंचार' के लक्ष्य के साथ देशभर में फैले अपने विज्ञान केंद्रों के नेटवर्क के माध्यम

से समाज में, खास तौर पर विद्यार्थियों में वैज्ञानिक संस्कृति को बढ़ावा देने में लगा है।

- ❶ देश में राष्ट्रीय, क्षेत्रीय और जिला स्तर पर विज्ञान केंद्र विकसित करने संबंधी विज्ञान नगरी योजना के लिए राष्ट्रीय विज्ञान संग्रहालय परिषद कार्यान्वयन एजेंसी है।
- ❷ परिषद का 25 विज्ञान संग्रहालयों/केंद्रों का नेटवर्क है और इसने 24 विज्ञान केंद्र विभिन्न राज्य सरकारों को बनाकर दिए हैं
- ❸ राष्ट्रीय विज्ञान संचार परिषद दो तरह की गतिविधियों का संचालन करती है: विज्ञान केंद्रों/संग्रहालयों, गैलरी, प्रदर्शनी, वस्तुओं और नवसृजन केंद्रों का विकास; और करके सीखने पर आधारित विज्ञान कार्यक्रमों तथा विद्यालय गतिविधियों का आयोजन।

विक्टोरिया मेमोरियल

- ❶ कोलकाता के विक्टोरिया मेमोरियल हॉल की स्थापना मुख्य रूप से वायसराय लॉर्ड कर्जन के प्रयासों से 1921 में भारत-ब्रिटेन इतिहास को रेखांकित करने वाले कालखंड संग्रहालय के रूप में की थी।
- ❷ 1935 के भारत सरकार अधिनियम के तहत इसे राष्ट्रीय महत्व की संस्था घोषित किया गया।
- ❸ यह 18वीं, 19वीं और 20वीं सदी के भारत-ब्रिटेन इतिहास का अग्रणी कालखंड संग्रहालय है।
- ❹ यह कोलकाता की प्रमुख कला दीर्घा, संग्रहालय, अनुसंधान पुस्तकालय और सांस्कृतिक स्थल भी है।
- ❺ यह भारत में भारत ब्रिटिश वास्तुशिल्प का बेहतरीन नमूना है जो 'राज के ताज' के नाम से भी मशहूर है।
- ❻ दुनिया के सबसे बड़े और यात्रा और पर्यटन संबंधी वेबसाइट ट्रिप एडवाइजर ने 2017 में इसे भारत के नंबर 1 और एशिया के नंबर 9 संग्रहालय के रूप में चिन्हित किया।
- ❼ भारत के शीर्षस्थ पर्यटन स्थल के रूप में इसके तेजी से बढ़ते कद का पता इसे लोनली प्लेनेट का 'टॉप च्वाइस' और 'फोर्ड्स च्वाइस' का दर्जा मिलने से भी चलता है।

राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला

- ❶ राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला की स्थापना 1976 में संस्कृति विभाग के अधीनस्थ कार्यालय के तौर पर की गई थी।
- ❷ इसे विज्ञान और टेक्नोलॉजी विभाग द्वारा भारत सरकार की वैज्ञानिक संस्था के रूप में मान्यता मिली हुई है।
- ❸ यह संग्रहालयों, अभिलेखागारों, पुरातत्व विभागों और अन्य संबद्ध सांस्कृतिक संस्थाओं को संरक्षण संबंधी मामलों में संरक्षण सेवाएं और तकनीकी सलाह उपलब्ध कराता है।

- ❶ यह संरक्षण के विभिन्न पहलुओं के बारे में प्रशिक्षण प्रदान करता है, संरक्षण की विधियों और तौर-तरीकों के बारे में अनुसंधान करता है, संरक्षण के बारे में ज्ञान का प्रसार करता है और देश में संरक्षण के कार्य में लगे कर्मियों की सेवाएं उपलब्ध कराता है।
- ❷ राष्ट्रीय सांस्कृतिक संपदा संरक्षण अनुसंधानशाला का मुख्यालय लखनऊ में है।

कला इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान संस्थान

- ❶ यह संस्कृति मंत्रालय द्वारा पूरी तरह वित्त पोषित स्वायत्त संगठन है जिसकी स्थापना 1989 में की गई और इसे विश्वविद्यालय के समकक्ष संस्थान का दर्जा दिया गया।
- ❷ यह संग्रहालय विज्ञान की शिक्षा प्रदान करने वाला भारत का एकमात्र संग्रहालय विश्वविद्यालय है। फिलहाल यह नई दिल्ली स्थित राष्ट्रीय संग्रहालय की पहली मंजिल में चल रहा है।

इसके मुख्य उद्देश्यों में

- ❶ कला, इतिहास, संरक्षण और संग्रहालय विज्ञान के विशेषज्ञता वाले क्षेत्रों में स्नातकोत्तर (एम. ए.) और पी. एच. डी. स्तर की शिक्षा प्रदान;
- ❷ भारतीय कला और संस्कृति के प्रचार-प्रसार के लिए कला की परख के बारे में हिंदी और अंग्रेजी में अल्पावधि पाठ्यक्रम संचालित करना;
- ❸ संग्रहालय शिक्षा, कला और संस्कृति पर संगोष्ठियां, कार्यशालाएं, सम्मेलन और विशेष व्याख्यान आयोजित करना है।

भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण

- ❶ भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण दुनिया में अपनी तरह का अनोखा संगठन है। 1945 में अपनी स्थापना के बाद से यह संगठन भारतीय जनसंख्या की जैव-सांस्कृतिक विशेषताओं के अध्ययन का अपना दायित्व पूरा कर रहा है।
- ❷ बीते दशकों में भारतीय मानवविज्ञान सर्वेक्षण मजबूत होता चला गया है और इसने देश के मानव वैज्ञानिक सर्वेक्षण के लिए एक बेजोड़ परिप्रेक्ष्य विकसित कर लिया है।
- ❸ इसकी गतिविधियों में शामिल हैं: मानव वैज्ञानिक सामग्री के संकलन, संरक्षण, रखरखाव और प्रलेखन के साथ-साथ प्राचीन मानव कंकालों के अवशेषों का अध्ययन करना।

भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार

- ❶ भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार भारत सरकार के प्रचलन से बाहर के रिकार्ड का संरक्षक है और रिकार्ड तैयार करने वालों तथा आम उपभोक्ताओं के लिए ऐसी सामग्री को न्यासी की तरह

सहेज कर रखता है।

- ❶ भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार दक्षिण-पूर्व एशिया में गैर-प्रचलित रिकार्ड का सबसे बड़ा भंडार भी हैं।
- ❷ किसी राष्ट्र की अमूल्य दस्तावेजी धरोहर है और देश के अग्रणी अभिलेखीय संस्था के नाते भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय दोनों ही स्तरों पर अभिलेखागारों के विकास और उन्हें नयी दिशा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- ❸ देश के सार्वजनिक रिकार्ड के लिए केंद्र सरकार के एकमात्र भंडार के नाते इसकी स्थिति बड़ी अנוखी है।
- ❹ भारतीय राष्ट्रीय अभिलेखागार संस्कृति मंत्रालय के संबद्ध कार्यालय के रूप में कार्य करता है राष्ट्र की दस्तावेजी धरोहर के परिरक्षण का दायित्व सौंपा गया है।
- ❺ यह 1993 के पब्लिक रिकार्ड्स एक्ट और 1997 के पब्लिक रिकार्ड्स रूल्स पर अमल के लिए भी यह नोडल एजेंसी के रूप में भी कार्य करता है और सार्वजनिक रिकार्ड्स के प्रबंधन, प्रशासन और परिरक्षण के लिए भी जिम्मेदार है।

पुस्तकालय

राष्ट्रीय पुस्तकालय

- ❶ राष्ट्रीय पुस्तकालय कोलकाता को पहले इंपीरियल लाइब्रेरी के नाम से जाना जाता था और इसकी स्थापना 1891 में हुई थी।
- ❷ स्वतंत्रता के बाद इसका नाम बदल कर नेशनल लाइब्रेरी यानी राष्ट्रीय पुस्तकालय कर दिया गया।

राष्ट्रीय महत्व की संस्था का दर्जा प्राप्त राष्ट्रीय पुस्तकालय निम्नलिखित कार्य करती है

- ❶ सभी प्रकार की महत्वपूर्ण मुद्रित सामग्री (रोजमर्रा की गैर जरूरी सामग्री को छोड़कर) और राष्ट्रीय महत्व की पांडुलिपियों का अधिग्रहण और संरक्षण।
- ❷ देश के बारे में तमाम मुद्रित सामग्री का संग्रह करना भले ही इस तरह की सामग्री कहीं भी छपी हो;
- ❸ सामान्य और विशिष्ट (दोनों प्रकार की वर्तमान और पुरानी सामग्री के बारे में ग्रंथ सूचीकरण और प्रलेखन सुविधा।
- ❹ परामर्श केंद्र के नाते ग्रंथसूची संबंधी तमाम सूचनाओं के तमाम स्रोतों के बारे में पूर्ण और सही-सही जानकारी हासिल करना ग्रंथसूची संबंधी अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियों में भाग लेना; और
- ❺ अंतर्राष्ट्रीय पुस्तक विनिमय केंद्र और देश के भीतर ऋण पर पुस्तकें उपलब्ध कराने वाले केंद्रों की भूमिका निभाना।

केंद्रीय सचिवालय पुस्तकालय

- ❶ केंद्रीय सचिवालय ग्रंथागार को प्रारंभ में इंपीरियल सेक्रेटैरिएट लाइब्रेरी कोलकाता के नाम से जाना जाता था और इसकी स्थापना 1891 में हुई।
- ❷ 1969 से यह पुस्तकालय नई दिल्ली के शास्त्री भवन में कार्य कर रहा है और इसमें मुख्यतः सामाजिक विज्ञानों और मानविकी से संबंधित विषयों के 7 लाख से अधिक दस्तावेज उपलब्ध हैं।

नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय

- ❶ नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय के अंतर्गत जवाहरलाल नेहरू के जीवन और समय के बारे में एक संग्रहालय, अनुसंधान और प्रकाशन प्रभाग; एक पुस्तकालय (जिसे देश में सामाजिक विज्ञान पुस्तकालयों में प्रमुख माना जाता है); मौखिक इतिहास प्रभाग; पांडुलिपि प्रभाग; समसामयिक अध्ययन केंद्र; तारा मंडल; और बच्चों और युवाओं के लिए नेहरू अधिगम केंद्र शामिल हैं।
- ❷ इसका अभिलेखागार व्यक्तियों और संस्थानों के निजी दस्तावेजों का सबसे बड़ा संग्रह है जिनमें से अधिकांश स्वाधीनता आंदोलन से संबंधित हैं।
- ❸ नेहरू स्मारक संग्रहालय और पुस्तकालय ने अब तक 1,364 जाने-माने लोगों के संस्मरणों की रिकार्डिंग की है जिनमें से 931 की ट्रांसक्रिप्ट यानी लिखित लिप्यंतरण कागज पर उपलब्ध हैं।

राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन

- ❶ पुस्तकालय और सूचना विज्ञान क्षेत्र के लगातार विकास पर ध्यान दिए जाने के राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की सिफारिशों के अनुपालन में संस्कृति मंत्रालय ने 2012 में राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन का गठन किया।
- ❷ इसे ये जिम्मेदारियां सौंपी गई हैं: भारत की राष्ट्रीय वर्चुअल लाइब्रेरी का निर्माण करना, राष्ट्रीय पुस्तकालय मिशन के आदर्श पुस्तकालयों की स्थापना, पुस्तकालयों का गुणवत्ता और संख्यात्मक दृष्टि से सर्वेक्षण, और क्षमता निर्माण करना।
- ❸ भारत की राष्ट्रीय वर्चुअल लाइब्रेरी का उद्देश्य भारत से संबंधित सूचनाओं और भारत में उत्पन्न सूचनाओं के बारे में ओपन एक्स से आधार पर डिजिटल संसाधनों का विस्तृत डेटाबेस तैयार करना है।

टैगोर सांस्कृतिक परिसर योजना

- ❶ टैगोर सांस्कृतिक परिसर योजना पूर्ववर्ती बहुउद्देश्यीय सांस्कृतिक परिसर योजना का संशोधित और सुधरा हुआ रूप है।
- ❷ गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर की 150वीं जयंती पर इसे नया नाम दिया गया।

- इसके अंतर्गत अलग आकार के नये सांस्कृतिक परिसर बनाने और टैगोर जन्म शताब्दी के सिलसिले में 1960 और 1970 के दशक में देश के विभिन्न भागों में बनाए गए टैगोर ऑडिटोरियम के आधुनिकीकरण, मरम्मत और उच्चाकरण के लिए भी वित्तीय सहायता दी जाती है।
- यह योजना राज्य सरकारों, राज्यों द्वारा प्रायोजित संगठनों, विश्वविद्यालयों, स्थानीय निकायों और सरकार द्वारा स्वीकृति अन्य संगठनों तथा मुनाफा कमाने के उद्देश्य से काम न करने वाले प्रतिष्ठित संगठनों के लिए खुली हुई है।

फेलोशिप और वजीफा योजना

1. **संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट व्यक्तियों को फेलोशिप प्रदान करने की योजना:** विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में अनुसंधान के लिए उत्कृष्ट कार्य करने वाले व्यक्तियों को कनिष्ठ (25 से 40 वर्ष) और वरिष्ठ (40 वर्ष से अधिक) फेलोशिप प्रदान की जाती है।
 - ये फेलोशिप दो साल के लिए होती हैं और इनके अंतर्गत कनिष्ठ अध्येता को 10,000 रुपये और वरिष्ठ अध्येता को 20,000 रुपये मासिक दिए जाते हैं।
 - इनके लिए ऑनलाइन आवेदन आमंत्रित किए जाते हैं और चयन के लिए गठित विशेषज्ञ समिति अध्येताओं का चयन करती है। इस तरह 400 फेलोशिप्स (200 कनिष्ठ और 200 वरिष्ठ) दी जाती है।
2. **विभिन्न सांस्कृतिक क्षेत्रों में युवा कलाकारों को छात्रवृत्ति देने की योजना:** इस योजना के अंतर्गत 18 से 25 साल तक के उत्कृष्ट प्रतिभा संपन्न युवा कलाकारों को भारतीय शास्त्रीय संगीत, भारतीय शास्त्रीय नृत्य, रंगमंच, माइम, दृश्य कलाओं, लोक, पारंपरिक और स्वदेशी कलाओं और उप शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में भारत के भीतर उच्च प्रशिक्षण के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। चुने गए उम्मीदवारों को दो साल तक 5,000 रुपये मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है।
 - इसके लिए आवेदन ऑनलाइन प्राप्त किए जाते हैं और खास तौर पर गठित विशेषज्ञ समिति उम्मीदवारों में से चयन करती है। किसी एक बैच वर्ष में 400 छात्रवृत्तियां दी जाती हैं।

टैगोर राष्ट्रीय फेलोशिप योजना

- ☉ यह योजना संस्कृति मंत्रालय के अंतर्गत विभिन्न सांस्कृतिक संस्थानों और देश की अन्य चिन्हित सांस्कृतिक संस्थाओं में नयी जान फूंकने और उन्हें पुनर्जीवित करने के लिए शुरू की गई थी ताकि विद्वानों/अकादमिक विशेषज्ञों को पारस्परिक हित

की परियोजनाओं पर कार्य करने के लिए इन संगठनों से जुड़ने को प्रेरित किया जा सके।

- ☉ यह योजना भारतीय नागरिकों और विदेशी नागरिकों दोनों ही के लिए खुली है।
- ☉ विदेशियों का अनुपात साल में दिए जाने वाले फेलोशिप्स की कुल संख्या के एक तिहाई से ज्यादा नहीं होगा।
- ☉ टैगोर फेलो को 80,000 रुपये मासिक अध्येतावृत्ति और आकस्मिक व्यय राशि दी जाती है।
- ☉ जबकि टैगोर स्कॉलरों को 50,000 रुपये मासिक मानदेय और आकस्मिक व्यय राशि दी जाती है।

गांधी धरोहर स्थल

- ☉ 2006 में भारत सरकार ने श्री गोपाल कृष्ण गांधी की अध्यक्षता में गांधी धरोहर स्थल पैनल का गठन किया और इसमें जाने-माने गांधीवादियों को सदस्य के रूप में शामिल किया।
- ☉ इस पैनल की सिफारिश पर 2013 में गांधी हेरिटेज साइट्स मिशन का गठन किया गया जिसका कार्यकाल 5 साल नियत किया गया।
- ☉ इसके लिए कुल 42 करोड़ रुपये का बजट भी निर्धारित किया गया। मिशन की अवधि मार्च 2020 तक के लिए बढ़ा दी गई है।
- ☉ मिशन को 39 मुख्य स्थलों के साथ ही मास्टर सूची के कुछ महत्वपूर्ण स्थलों के परिरक्षण का दायित्व सौंपा गया है।

गांधी स्मृति और दर्शन समिति

- ☉ गांधी स्मृति और दर्शन समिति की स्थापना 1984 में एक स्वायत्त संगठन के रूप में राजघाट स्थित गांधी दर्शन और गांधी स्मृति के विलय से हुई थी।
- ☉ यह संस्कृति मंत्रालय की वित्तीय सहायता से कार्य करती है।
- ☉ भारत के प्रधानमंत्री इसके अध्यक्ष हैं और विभिन्न गतिविधियों में दिशा निर्देश के लिए इसमें विभिन्न सरकारी विभागों के प्रतिनिधि शामिल किए गए हैं।
- ☉ समिति का मूल लक्ष्य और उद्देश्य विभिन्न सामाजिक-शैक्षिक और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महात्मा गांधी के जीवन, मिशन और विचारों का प्रचार-प्रसार करना है।
- ☉ इसके दो परिसर हैं: गांधी स्मृति और गांधी दर्शन।

पर्यटन

- ☉ पर्यटन मंत्रालय पर्यटन के विकास और इसे बढ़ावा देने के लिए राष्ट्रीय नीतियां और कार्यक्रम तैयार करने वाली नोडल एजेंसी हैं।
- ☉ इस प्रक्रिया में मंत्रालय विभिन्न केंद्रीय मंत्रालयों/एजेंसियों, राज्य

सरकारों/केंद्रशासित प्रदेश प्रशासनों और निजी क्षेत्र के प्रतिनिधियों से परामर्श और सहयोग करती है।

विदेशी पर्यटकों का आगमन

- ❶ वर्ष 2016 में भारत में विदेशी पर्यटकों के आगमन में 10.7 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई। इस वर्ष के दौरान 88.9 लाख (अनंतिम) विदेशी पर्यटक भारत पहुंचे जबकि 2015 के दौरान यह संख्या 80.3 लाख रही थी।
- ❷ 2016 में पर्यटन से विदेशी मुद्रा की आय में 15.1 प्रतिशत की बढ़ोतरी हुई थी और रुपयों में आमदनी 1,55,650 करोड़ रुपये (अनंतिम) रही थी।

ई-वीजा सुविधा

- ❶ विदेशों से आने वाले पर्यटकों की संख्या बढ़ाने के लिए सुविधाजनक वीजा प्रणाली एक पूर्व-शर्त है।
- ❷ इस लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए पर्यटन मंत्रालय गृह मंत्रालय और विदेश मंत्रालय के साथ मिलकर पहल कर रही है।
- ❸ दिसंबर 2016 तक ई-वीजा सुविधा तीन श्रेणियों के तहत उपलब्ध हो चुकी थी इनके नाम हैं: ई-टूरिस्ट वीजा, ई-बिजनेस वीजा और ई-मेडिकल वीजा।
- ❹ ई-वीजा सुविधा का विस्तार 161 देशों के नागरिकों के लिए कर दिया गया है।

चौबीसों घंटे और सातों दिन बहुभाषी टूरिस्ट इन्फो-लाइन

- ❶ घरेलू और अंतर्राष्ट्रीय पर्यटकों/आगंतुकों को यात्रा और पर्यटन के बारे में सूचना उपलब्ध कराने और भारत में यात्रा करते समय सलाह देकर मदद करने के लिए पर्यटन मंत्रालय हिंदी और अंग्रेजी के अलावा 10 अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में सप्ताह में सातों दिन और चौबीसों घंटे बहुभाषी टूरिस्ट इन्फो लाइन सेवा उपलब्ध कराती है।
- ❷ भारत में रहते पर्यटकों द्वारा की गई कॉल्स (अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू) निःशुल्क होती हैं।
- ❸ यह सेवा टेलीफोन नं. 1800 111 363 या संक्षिप्त कोड 1363 पर उपलब्ध रहेगी।
- ❹ जिन अंतर्राष्ट्रीय भाषाओं में यह सेवा उपलब्ध है उनमें हिंदी और अंग्रेजी के अलावा अरबी, फ्रांसीसी, जर्मन, इतालवी, जापानी, कोरियन, चीनी, पुर्तगाली, रूसी और स्पेनिश शामिल हैं।

अतुल्य भारत

- ❶ पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए अपनी संवर्धन गतिविधियों के अंतर्गत अंतर्राष्ट्रीय और घरेलू बाजारों में इंक्रेडिबल इंडिया यानी अतुल्य भारत के नारे के साथ प्रचार अभियान चलाता है।
- ❷ इसका उद्देश्य भारत के विभिन्न पर्यटन स्थलों और उत्पादों को बढ़ावा देना है ताकि देश में अधिक संख्या में विदेशी पर्यटकों का आगमन हो और घरेलू पर्यटकों की संख्या भी बढ़े।
- ❸ विदेशों में भारत पर्यटन कार्यालयों के जरिये महत्वपूर्ण और संभावित बाजारों में कई तरह की प्रोत्साहन गतिविधियां संचालित की जाती हैं।

पूर्वोत्तर भारत

- ❶ पर्यटन मंत्रालय भारत के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों को अपने अनेक मीडिया प्रचार अभियानों के माध्यम से बढ़ावा दे रहा है।
- ❷ 2016 में दूरदर्शन के नेटवर्क पर पूर्वोत्तर के प्रचार के लिए एक-एक महीने का टेलीविजन अभियान दो चरणों में चलाया गया।
- ❸ पर्यटन के बुनियादी ढांचे के निर्माण के लिए पर्यटन मंत्रालय के दो प्रमुख योजनागत कार्यक्रम हैं।
- ❹ इनमें से 'स्वदेश दर्शन थीम' यानी किसी खास विषय पर आधारित पर्यटन सर्किटों के समन्वित विकास के लिए है जबकि 'प्रसाद' नाम का दूसरा कार्यक्रम ऐतिहासिक स्थानों और धरोहर स्थलों समेत देश में पर्यटन के आधारभूत ढांचे के विकास को ध्यान में रखते हुए तीर्थ यात्रा की परम्परा को पुनर्जीवित करने और अध्यात्मिक उन्नति का अभियान है।

□□□

परीक्षा उपयोगी प्रश्न

प्र.1 निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

- 1 विश्व विरासत स्थलों का संरक्षण व संवर्धन का कार्य यूनेस्को द्वारा किया जाता है।
- 2 मिश्रित श्रेणी के धरोहरों में वे स्थल आते हैं जहाँ दो से अधिक धर्म के तत्व पाए जाते हैं।
- 3 गुजरात के पाटन में स्थित रानी की वाव विश्व धरोहर स्थल में शामिल हैं।

उपरोक्त कथनों में से कौन सा/से सही है/ हैं?

- (a) केवल 1 (b) 2 व 3
(c) 1 व 3 (d) 1, 2 व 3

प्र.2 निम्नलिखित विरासत स्थलों में से कौन सा युग सुमेलित नहीं है-

- (a) अंजता की गुफाएँ - महाराष्ट्र
(b) महाबलीपुरम् - आंध्र प्रदेश
(c) चपानेर - पावागढ़ पार्क - गुजरात
(d) हम्पी अवशेष - कर्नाटक

प्र.3 निम्नलिखित में से कौन सा/से ध्रुपद गायन शैली के घरानों में शामिल नहीं हैं-

- 1 ग्वालियर घराना 2 फिरोजपुर घराना
3 पटियाला घराना 4 लखनऊ घराना
(a) 1 व 2 (b) 1, 2 व 3
(c) 2 व 4 (d) 2, 3 व 4

प्र.4 संगीत नाटक अकादमी के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए:

- 1 इसकी स्थापना सन् 1975 में हुई थी।
- 2 यह अकादमी मंचन कलाओं के क्षेत्र में राष्ट्रीय महत्व के संस्थानों और परियोजनाओं की स्थापना व देखरेख करती हैं।
- 3 इस अकादमी द्वारा स्थापित प्रथम संस्थान इंदिरा का जवाहरलाल नहेरू मणिपुरी नृत्य अकादमी है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/ से सही है/हैं?

- (a) 1 व 2 (b) 2 व 3
(c) 1 व 3 (d) 1, 2 व 3

प्र.5 निम्नलिखित पर विचार कीजिए-

1. साहित्य अकादमी आनरेरी फेलोशिप
2. प्रेमचंद्र फेलोशिप
3. अमर फेलोशिप

उपरोक्त में से कौन-सा/से साहित्य अकादमी द्वारा दी जाती है/ हैं?

- (a) 1 व 2 (b) 1 व 3
(c) 2 व 3 (d) केवल 3

प्र.6 निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. पर्यटन एवं संस्कृति मंत्रालय के अधीन भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण की स्थापना पुरातात्विक गतिविधियों एवं विरासतों की देखरेख के लिए की गई थी।
2. पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग प्राचीन स्मारक और पुरातत्व स्थल तथा अवशेष अधिनियम 1958 के अंतर्गत स्मारकों/स्थलों को राष्ट्रीय महत्व का स्थल या स्मारक घोषित करता है।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 व 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

प्र.7 राष्ट्रीय धरोहर विकास एवं संवर्धन योजना के विषय में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

1. इस योजना को उद्देश्य देश के विरासत शहरों का समेकित, समावेशी और सतत् विकास करना है।
2. इस योजना का संचालन शहरी विकास मंत्रालय द्वारा किया जा रहा है।
3. योजना के पहले चरण में देश भर के 21 विरासतों का संरक्षण व समग्र विकास किया जाएगा।

उपरोक्त कथनों में से कौन-सा/से सही है/हैं?

- (a) 1 व 3 (b) 2 व 3
(c) केवल 1 (d) केवल 3

Answer Key:

1. (c) 2. (b) 3. (b) 4. (b) 5. (a) 6. (c) 7. (a)